

जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्रालियर

संसार पर अवश्यक कृतिपूर्वी जीवाजी
विश्वविद्यालय की जगह हो दी जिनमा जारी की
जाने वाली अब विद्यालयीन कृति है।
विद्यालयीन विद्या पर यही पूर्ण तौर पर
विद्यालय कुरा हो जाए एवं ज्ञानका उपर विद्यालय
जीवाजी विश्वविद्यालय ही है।



फोन : ०२५८३८५७१
फॉक्स : ०२५८३८५६१ / २२४२८०१
०२५८३८५२ / ०२५८३८५३
फैसल : ०२५८३८५८१-२२४२८०१
ई-मेल : jeev@jeevj.vuji.edu.in
वेबसाइट : <http://www.jeevj.vuji.edu.in>

देसपात्र
जीवाजी विश्वविद्यालय
ग्रालियर

फोन : एक/सम्पर्क २०१२/५८७-२

दिनांक २१/१२/०१२

// अधिसूचना //

विश्वविद्यालय अधिनियम १९७३ की धारा २६(i)(v) एवं २४(xii) के अन्तर्गत कार्यविरुद्ध ही नियंत्रक दिनांक ०७ अगस्त, २०१२ के पार क्रमांक (०२) के विद्यालयालय राज इंस्टीट्यूट ऑफ विद्या
एवं विद्यालय लकड़ा, ग्रीष्म के सत्र २०११-१२ के लिए प्रस्तावित अधिनियम के लिए
अट्टाइ सम्बन्धित विवर शर्तों के साथ प्रदान की जाती है।

शर्तें/प्रतिबंध :-

१. ज्ञा वर्ष परिवेशम् २८(१७) की विद्युतियां ०-२०० में करने देते शर्त ज्ञावर्ष जारी की लेतिल आज दिनांक तक विद्युतियां पूर्ण बद्दी ही नहीं हैं। वे विद्युत जो ग्रीष्म-दी जारी हैं एवं उन्होंने ये वर्ष में ग्रीष्म-दी उपर्युक्त ग्राम नहीं ही हैं, उनकी विद्युतियां दो वर्षोंपश्चात व्यवहार लिया जाए हो नहीं हैं।
२. प्रबोधन उत्तराखण्ड में दिल क्रमांक व दिनांक अवधार नहीं हैं एवं एकोशन क्रमांक भी नहीं है।
३. विज्ञाकर्ता को वेतन वेक द्वारा उही दिया जा सकता है एवं केंद्र भुक्ति प्रति श्री वराज नहीं ही नहीं है।
४. गणितियम् २७-२८ के अनुपालन में नवर्जित योगी व छोटेनेज कार्डमेल की लेटर्ज व ग्रामीणविद्यालय बुटिएर्स प्रतीत होता है। विश्वविद्यालय प्रतिविधि का ज्ञान कर्ती श्री अंदेजा भी है।
५. पुस्तकालय एवं आवक पुस्तकों एवं छंडल अपर्याप्त हैं एवं ज्ञान प्राप्ति भी विपरीता नहीं है।

ग्रामालय
जीवाजी विश्वविद्यालय
ग्रालियर

प्रति,

१. प्राकार्ण, सब इंस्टीट्यूट ऑफ विवर एवं विद्यालय लकड़ा, ग्रीष्म
२. लवित, ग्रीष्म अव्यापक विद्या विभिन्न, ग्राम विवर, विद्यालय हिल्स, भोपाल
३. अव्युक्त, सर्वप्रदेश लाला, उम्म विद्या विवर, लाला भाजा, लोपाटा।
४. श्रीनिवास अंतोनियोन लकड़ा, ग्रामविद्यालय लाला, उम्म विद्या विवर, विद्यालय-विवर लाला, लोपाटा, ग्रामविद्यालय।
५. उप-कूलकालिंग (परीमान-विवरीय) प्रतीती विश्वविद्यालय, अंदेजा।
६. अव्युक्त, परीका काश क्र-फॉ-०३, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्रामविद्या की ओर सूचारे द्वारा दिया गया है।

संतान विवर (अन्वरुद्ध)